जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

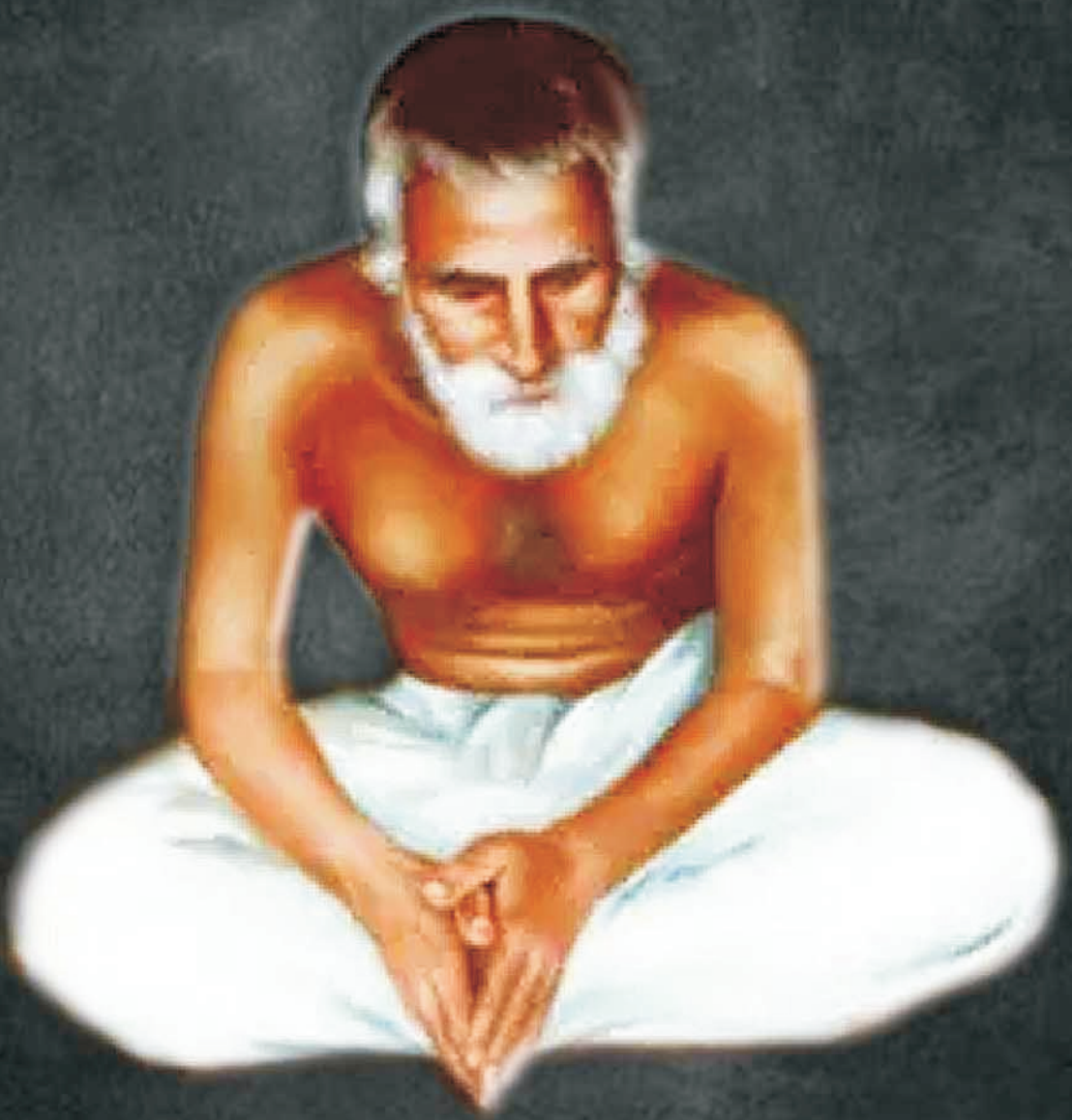

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर

“गौर” “गौर”

नहीं

“रुपया” “रुपया”

एक बार कुछ लोग भागवत-व्याख्या में सुनिपुण किसी गोस्वामी-वंशज की महिमा, बाबाजी महाराज के पास आकर कहने लगे कि ये गोस्वामी-सन्तान सदैव ही 'गौर-गौर' कहते हैं एवं विभिन्न प्रकार की भावुकता दिखलाकर बहुत शिष्य संग्रह करते हैं। उक्त गृहव्रत गोस्वामी का रहस्य सबके सामने व्यक्त करते

हुए कहने लगे– उक्त गोस्वामी-वर, गोस्वामी-शास्त्र की व्याख्या नहीं करता, वह इन्द्रिय-शास्त्र की व्याख्या करता है एवं वह "गौर-गौर" नहीं बोलता, पैसा - पैसा, मेरा पैसा कहकर चिल्लाता रहता है, वह कभी भी भजन नहीं है। उसके द्वारा वास्तविक वैष्णव-धर्म ढक रहा है एवं जगत के अनिष्ट के अतिरिक्त किसी प्रकार का उपकार नहीं हो रहा है।"

महाभागवतगण अन्तर्यामी होते हैं। इसलिए जीवों के अन्दर

की स्थिति सब जान लेते हैं। आम जनता जब किसी कपटी से 'गौर' 'गौर' सुनती है, महाभागवत तब उसका असल बोल जान जाते हैं और सब लोगों को सांप के द्वारा जूठा किये हुए दूध की तरह उस हरिकथा से सावधान कर देते हैं।

श्रीलगुरुदेव